जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन

अशोक कुमार सिडाना [1]

सारिका साहनी [2]

सारांश– आकांक्षा स्तर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के उभयपक्षों को प्रभावित करता है। यह विद्यार्थियों के लिंग, संकाय एवं विद्यालय की प्रकृति के आधार पर भिन्न–भिन्न हो सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य में राजस्थान राज्य के जयपुर एवं टोंक जिले में स्थित राजकीय एवं निजी विद्यालयों की उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत 400 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया। दत्त संकलन हेतु डॉ. एम. ए. साह एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा विकसित आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया गया। क्रांतिक अनुपात परीक्षण के माध्यम से विश्लेषित आंकड़ों से ज्ञात हुआ कि विभिन्न आधारों पर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्दावली– आकांक्षा स्तर

प्रस्तावना–

आकांक्षायें एक प्रकार से निर्देश बिन्दु हैं, जो कि प्रत्येक व्यक्ति के पूरे जीवन और उसके कृत्यक प्रारूप को प्रभावित करते हैं। औद्योगिक रूप से विकासशील समाज में उच्च–आकांक्षाओं को प्रभावशाली सांस्कृतिक मूल्यों की सफलता के शब्दों में लिया जाता है। आकांक्षायें व्यक्ति के अहम् आधारित लक्ष्य होते हैं, जिन्हें वह अपने लिये निर्धारित करता है।

1 आचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा, महाविद्यालय, सी.टी.ई., केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर।

2 शोधार्थी, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं।

अहम् पर आधारित आकांक्षायें उसके व्यवहार के क्षेत्र से अधिक सम्बन्धित होती है, जो उसके लिये महत्वपूर्ण होती है।

बैबस्टर शब्द कोष के अनुसार शब्द ेचपतंजपवद का अर्थ है– आकांक्षा (Ambition), कामना और लालसा (Longing)। सामान्य बोलचाल की भाषा में Ambition और Aspiration को एक दूसरे के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है और बहुधा एक–दूसरे के स्थान पर प्रयोग किये जाते हैं परन्तु Ambition और Aspiration में अन्तर है। (Webster, 2007)

हरलॉक के अनुसार महत्वकांक्षा का अर्थ है उत्सुकता या एक विशेष अन्तिम लक्ष्य, प्रसिद्धि, सम्मान वरिष्ठता या शक्ति प्राप्त करने की उत्साहपूर्ण इच्छा, आकांक्षा को परिभाषित करते हुये हरलॉक ने लिखा है कि ''किसी वस्तु के लिए लालसा और प्रयत्न करना, जो किसी की पहुँच से और वर्तमान पद से ऊपर हो। यह लालसा उन्नत बनाने या ऊँचा उठाने की हो सकती है, यह अप्राधिकृत या अभिमानी है। आकांक्षा एक लक्ष्य है, जिसे व्यक्ति किसी कार्य में जो उसके लिये प्रबल व्यक्तिगत महत्त्व का है या जिसमें उसका अहम् शामिल है, के लिये निश्चित करता है।'' (Hurlock, 1967)

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन–

Sukhiya, (1960) ने उपलब्धि से सम्बन्धित मूल्यों का व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव का अध्ययन किया। विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों व विभिन्न बुद्धि के बालकों के अन्तर्गत यह अध्ययन किया गया।

Sundarrajan & Rajshekhar, (1988) ने अपने शोध अध्ययन ''हायर सैकण्डरी स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा'' का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष प्राप्त किये कि–शहरी विद्यार्थियों का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर ग्रामीण विद्यार्थियों से अच्छा होता है। लड़कियों का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर लड़कों की अपेक्षा अच्छा होता है।

Kumar, (1989) ने अरूणाचल प्रदेश के माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों के समायोजन, अभिवृत्ति, रूचि और आकांक्षा स्तर के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अन्तर होता है। आकांक्षा स्तर का अन्य घटकों (समायोजन, अभिवृत्ति, रूचि) से सम्बन्ध नहीं पाया जाता चाहे वे आदिवासी या गैर आदिवासी हैं।

Bhargav, (1989) सुषमा भार्गव ने दुश्चिन्ता व अर्न्तद्वन्द के प्रभाव एवं उनका आकांक्षा स्तर से सम्बन्ध का अध्ययन किया इन्होंने आगरा नगर के अलग–अलग इन्टर मिडियट डिग्री कॉलेजो में अध्ययनरत 800 छात्राओं का न्यादर्श लिया और निष्कर्ष प्राप्त किये कि– अवास्तविक लक्ष्य निर्धारण एवं अधिक अन्तर दुश्चिन्ता को बढ़ाता है जबकि वास्तविक लक्ष्य निर्धारण एवं कम अन्तर दुश्चिन्ता को कम करता है। आकांक्षा का स्तर कुछ हद तक अर्न्तद्वन्द को प्रभावित करता है।

Jain, (1990) राजस्थान के शहरी व ग्रामीण किशोर छात्राओं के मूल्य, आकांक्षा स्तर एवं व्यक्तितव गुणों का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि शहरी व ग्रामीण छात्राओं का आकांक्षा स्तर औसत होता है।

Tripathi, (1990) ने हाई स्कूल के आदिवीस एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन का उनके आत्म सम्बोधन, आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा से सम्बन्ध का अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किए– इन विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन और आकांक्षा स्तर के बीच ऋणात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया है। आदिवासी विद्यार्थियों का गैर आदिवीस विद्यार्थियों की तुलना में निम्न शैक्षिक निष्पादन और निम्न आकांक्षा स्तर पाया जबकि दोनों समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा समान पायी।

Vijay, (1990) विजय ने कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व, शैक्षिक निष्पत्ति और आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया। न्यादर्श रूप में कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के 600 बच्चों को चुना। अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किया कि कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के आकांक्षा स्तर में सार्थक

अन्तर नहीं है। कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के मध्य शैक्षिक निष्पत्ति, आकांक्षा स्तर में उच्च सह–सम्बन्ध पाया जबकि गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों में यह धनात्मक एवं औसत पाया गया।

Pareek, (1990) ने राजस्थान के निजी विद्यालयों राजकीय विद्यालयों तथा केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरों की स्वधारणा व्यक्तित्व कारकों एवं आंकाक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करके पाया कि केन्द्रीय तथा राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी अधिक प्रतिभाशाली और कल्पनाशील है जबकि निजी विद्यालयों के विद्यार्थी तुलनात्मक रूप से अधिक व्यवहारिक है।

Bhargav M., (2008) के अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि अधिकत्तर छात्र–छात्राएं सामान्य आंकाक्षा स्तर के हैं परन्तु लड़कों का आंकाक्षा स्तर लड़कियों की तुलना में उच्च है। दुश्चिन्ता व आंकाक्षा स्तर में ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व–

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की आंकाक्षा स्तर व राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। देश में यदि शिक्षा का आकलन किया जाए तो कक्षा एक में प्रवेश लेने वाले कुल छात्रों में से 73.41 प्रतिशत छात्र ही कक्षा दो में प्रवेश ले लेते है। कक्षा 8 तक तो यह संख्या घटकर 31.11 प्रतिशत रह जाती है। माध्यमिक स्तर तक पहुँचते–पहुँचते यह प्रतिशत और भी कम हो जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि देश के 68. 89 प्रतिशत छात्र बचपन में ही शिक्षा की महत्त्वपूर्ण दौड़ से बाहर हो जाते है। उडीसा, बिहार, आन्ध्र प्रदेश में तो यह स्थिति और भी गम्भीर है। ग्रामीण क्षेत्रों में इस स्तर पर छात्राओं का अनुपात छात्रों की तुलना में बहुत कम पाया जाता है।

ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राएँ विशेष रूप से छात्राएँ कई प्रकार की सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक समस्याओं से ग्रसित होते हैं। उनकी पारिवारिक परिस्थितियाँ उनके अध्ययन के लिए सकारात्मक वातावरण प्रस्तुत नहीं करती हैं। उनके माता–पिता प्रायः अशिक्षित होते हैं

और आर्थिक दृष्टि से कमजोर होते हैं। बचपन से ही वे काम के बोझ से दबे होते हैं। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बालिकाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता इसलिए महसूस की गई क्योंकि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्तियों के जीवन स्तर में काफी भिन्नता होती है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों में सोचने विचारने, उनकी आवश्यकताओं, अभिरूचियों और आंकाक्षाओं व राष्ट्रीय चेतना में भिन्नता होती है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों का पर्यावरण शहरी क्षेत्रों से काफी भिन्न होता है।

उद्देश्य–

1. जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
2. लिंगभेद के आधार पर जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. संकाय के आधार पर जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. विद्यालयों के प्रकार के आधार पर जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. लिंगभेद के आधार पर जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. संकाय के आधार पर जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. विद्यालय के प्रकार के आधार पर जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा जयपुर व टोंक जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रणाली से किया गया है।

चर–

विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर

उपकरण–

आकांक्षा स्तर मापनी ;Level of Aspiration Measure)- डॉ. एम. ए. साह एवं डॉ. महेश भार्गव। मापनी के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (GDS) एवं उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक (ADS) का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण–

सारणी संख्या–1

समूह	न्यादर्श	जयपुर जिले के किशोर विद्यार्थी		टोंक जिले के किशोर विद्यार्थी		सी. आर.
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक	400	5.73	2.33	5.44	2.44	0.02
उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक	400	5.40	2.46	5.46	2.43	0.35

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर मापनी पर आधारित प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 5.73 और 5.44 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.33 एवं 2.44 प्राप्त हुए तथा सी. आर. मान 0.02 प्राप्त हुआ जो कि df 798 हेतु 0.05 एवं 0.01 स्तर पर निर्धारित मान 1.96 एवं 2.58 से कम है। अतः लक्ष्य भिन्नता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या–2

समूह	न्यादर्श	किशोर बालक		किशोर बालिकाएँ		सी. आर.
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक	400	5.43	2.38	5.74	2.39	0.21
उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक	400	5.34	2.45	5.52	2.44	1.06

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि लिंगभेद के आधार पर ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर मापनी पर आधारित प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 5.43 और 5.74 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.38 एवं 2.39 प्राप्त हुए तथा सी. आर. मान 0.21 प्राप्त हुआ जो कि df 798 हेतु 0.05 एवं 0.01 स्तर पर निर्धारित मान 1.96 एवं 2. 58 से कम है। अतः लक्ष्य भिन्नता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या–3

समूह	न्यादर्श	कला संकाय के	विज्ञान संकाय के	सी. आर.

		किशोर विद्यार्थी		किशोर विद्यार्थी		
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक	400	5.63	2.38	5.54	2.40	0.06
उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक	400	5.50	2.51	5.36	2.38	0.82

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कला और विज्ञान संकाय के किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर मापनी पर आधारित प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 5.63 और 5.54 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.38 एवं 2.40 प्राप्त हुए तथा सी. आर. मान 0.06 प्राप्त हुआ जो कि df 798 हेतु 0.05 एवं 0.01 स्तर पर निर्धारित मान 1.96 एवं 2. 58 से कम है। अतः लक्ष्य भिन्नता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या–4

समूह	न्यादर्श	जयपुर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थी		टोंक जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थी		सी. आर.
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक	200	5.80	2.39	5.37	2.41	0.30
उपलब्धि भिन्नता	200	5.39	2.49	5.53	2.59	0.56

प्राप्तांक						

सारणी संख्या 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर मापनी पर आधारित प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 5.80 और 5.37 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.39 एवं 2.41 प्राप्त हुए तथा सी. आर. मान 0.30 प्राप्त हुआ जो कि df 398 हेतु 0.05 एवं 0.01 स्तर पर निर्धारित मान 1.96 एवं 2. 58 से कम है। अतः लक्ष्य भिन्नता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष–

1. जयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर टोंक जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की तुलना में लक्ष्य भिन्नता आधार पर कम तथा उपलब्धि भिन्नता आधार पर अधिक पाया गया किन्तु इनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर बालकों का आकांक्षा स्तर बालिकाओं की तुलना में लक्ष्य भिन्नता एवं उपलब्धि भिन्नता आधार पर कम पाया गया तथा इनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कला संकाय के किशोर विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर विज्ञान संकाय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में लक्ष्य भिन्नता एवं उपलब्धि भिन्नता आधार पर अधिक पाया गया तथा इनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. जयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर टोंक जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की तुलना में लक्ष्य भिन्नता आधार पर अधिक एवं उपलब्धि भिन्नता आधार पर कम पाया गया तथा इनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ–

Bhargav, M. (2008). *Study of Aspiration Level of Boys and Girls ar Different Schools.* Agra: Bhimrao ambedkar University.

Bhargav, S. (1989). *Effect of Enxity and Conflicts and their relationship with aspiration Level.* Agra: Agra University.

Hurlock. (1967). *Adolescent development* . New York: McGraw Hill.

Jain, G. L. (1990). *Comparative Study of Values, aspiration Level and Personality Traits of Urban and Rural Teenagers.* Jaipur: Rajasthan University.

Kumar, Y. (1989). *Study of Adjustment, Attitide, Interest and aspiration Level of Trible and Non Trible Secondary Students of Arunachal Pradesh.* Sikkim: Sikkim University.

Pareek, D. L. (1990). *A Study of Self Expectations, PErsonality Factors and Aspiration among Private, Government and Central Schools.* Jaipur: Umniversity of Rajasthan.

Sukhiya, J. (1960). *Effect of Achievement values on Professional Aspiration.* Agra: Agra University.

Sundarrajan, S., & Rajshekhar, S. (1988). *Professional Aspiration of higher econdary Students.* Chennai: Madras University.

Tripathi, S. K. (1990). *A Study of effect of Academic Achievement on Self-Reglation, aspiration Level and Academic Motivation of Trible and Non Trible Students.* Agra: Agra University.

Vijay. (1990). *A Study of Personality, Academic Achievement and Aspiration of Children of Working and Non Working Women.* Agra: Agra University.

Webster, M. (2007). *Dictionary by Merriam-Webster.* New York: Merriam Webster .